

आशा सरस्वती

1/22

ASHA ARCHIVES



ॐ नमो वाग्मये ॥ सर्व इति कश्चिन्माला विनीयुष्य मालिनी । हनारुतायि
नीतस्य बागीभाये नमानिनी ॥ १ ॥ अगस्त्यवाय ॥ मानुजं भक्तुनाम ॥
रुद्रयडनन्दनः । दानववर्णयुयानवः सकलमानुजहृन् ॥ २ ॥
दवागामाः केनेवयुडिगायनः । यक्षवक्त्रैश्च तत्तत्तत्सर्वं व ॥
॥ ३ ॥ लामहर्षत उवाच ॥ पुष्पमानं यदाहूतं किन्दोऽवुवीहवान्मया ।
यश्चैसाधूवैलूकाः सर्वं तस्मै दिङ्माह ॥ ४ ॥ किन्द उवाच ॥ श्रीगिरिज

शूद्रयासागिथिभ्याका कुरुकारिण्युगायदि ॥ उदकमाम्बुधनैव गालवर्न
सवन्दनं । प्रितिकुमस्यपीत्यर्थदानवीसाधुरिः सदा ॥ ॥ सुविष्टपूना ॥ य
किञ्चिदीयगंदानं स्वल्पमायदिवावड् । तत्सर्वमदयैदिस्यात्तनासावकया
सुता ॥ ॥ यमः ॥ वैष्णवश्च कुपयैतु हनीयायान्कथिवव । गंगगायनन
सात्वा सर्वपापेष्वयमूचीने ॥ ॥ सुविष्टपूना ॥ वापिदानं यदाहूतं स्यात्तना
दकानाश्च तानगविष्णुश्च सासिवाङ्मन्द हनीयायिनन्दनस्यव ॥ ॥ दवीपूना

खा॥ नृगीयायानुवेष्टमखं नाहिष्य के इष्टमखं वा उदकं सुयदानं न
लाकं मदीयं ॥ कुलं धीनं गथावानं घृते वा विविण्णं स गथा द्रव्यं दहम
कथं स्यात् नयमेकं यास्यता ॥ ६० ॥ स्यात् कथिता वा ज्ञानं नृगीया गिधि नृ
मा यामूपायानं वा ज्ञानं वृद्धि वृद्धि धियं नृगतं ॥ ॥ विष्णु धर्म ॥ ३
रात्रि समायुक्तं वर्द्धनीयं यय कृति ॥ नृगीया यो स वेष्टमखं वृद्धं लाकं म
दीयं ॥ ॥ महासावनं ॥ सुवर्णं तिलयुक्तं वा नृक्षानं यय सफवा गयय

दद्रुपायं सु वृद्धं रुपायं यय कृति ॥ ॥ यम ॥ वेष्टमखं यो नृमा स्यान्तु वा नृक्षानं
नृयय सफवा को डयुक्तं तिलं ६ कृष्टं नागयय दिवंगतं ॥ यीया नृ धर्म नाउ
ति यय मनसि नावतं या वृद्धी वृद्धी यायं तद्वत्ता दवनं यय ॥ ॥ अथ य
य कृष्टं ॥ महासावनं नृगतं ॥ ॥ अथ मूलं पुण्या मासं मकरं नृ नृ दिपं ॥
वेष्टमखं मूलं पुण्या यमानं मूलं वा विग कृति ॥ ॥ वृद्धं पुण्या ॥ ॥ अथ य
य कृष्टं दशमी समस्तं नृ नृ वृद्धं ॥ मस्यां स्यान्तं यय वृद्धं नृ नृ वृद्धं विग

तः॥ यांकां विलुपिनीयाया दद्याद्देहि सिलादकं। मद्युतदगलिः ययि
र्महापातकसंक्षिप्तं॥ ४॥ ॐ वृष्टुं केदमस्यानु रवदोमदिनं यदि। ॐ वादस
कं संयुक्ता सर्वयायदनामिथि॥ अदलोना मया दाने हि सावेव विधन
तः॥ यत्र दानाय सवाव गनीनं विविधं स्मृत्तं॥ पात्रुष्टमन गेवैत धेनूनां
पिसर्वगः॥ अनिवेद्य यलायश्च वाद्ययं सावदुर्विधं॥ यत्र दधं दधिस्यो न
मनसा निष्ठु विरुने। विगथा हि निवेद्यं मातसं विविधं स्मृत्तं॥ ४॥ वृष्टुं के

नावासा यगमद्यु दिगीदत्वा स्वर्गलाकमवाप्नाति॥ ॥ विष्णुधर्म॥ अथ
ॐ वृष्टुं केदमस्यानु रवदोमदिनं यदि। ॐ वादस
कं संयुक्ता सर्वयायदनामिथि॥ अदलोना मया दाने हि सावेव विधन
तः॥ यत्र दानाय सवाव गनीनं विविधं स्मृत्तं॥ पात्रुष्टमन गेवैत धेनूनां
पिसर्वगः॥ अनिवेद्य यलायश्च वाद्ययं सावदुर्विधं॥ यत्र दधं दधिस्यो न
मनसा निष्ठु विरुने। विगथा हि निवेद्यं मातसं विविधं स्मृत्तं॥ ४॥ वृष्टुं के

लक्ष्म्या च यित्वा ॥ ७ ॥ बाह्यं क्षमाया पयादयेता ॥ मालिपुतिगृह्णात् ॥ लभ वि
 न्दया युता मिति ॥ सम्यगुच्चार्य गैवियं ॥ लभ विन्द नृपकल्पयता ॥ अनवउच्च
 गन्तुं यदा न्येक्षेन नाधिय ॥ जनेन विधिना ॥ धनं विषाययेय ॥ यय ॥ कृति ॥
 ॥ लभ विन्द प्रीक्षना डाऊन ॥ विष्णु लोके सुगच्छति ॥ सफवाना सुधा पूर्वान सफा ॥
 लोनीयमानवः ॥ सफऊ न्म कृतायाया ॥ मा वयस्य वनीयते ॥ यदयं दं दुय ॥
 स्या ॥ लभदानस्य गुमानवः ॥ रुलीया प्राणि वाऊन ॥ दक्षा ये वैऊ ॥ लभ रुनि ॥

१२

सर्वकामयदासास्या ॥ सर्वकालेषु पार्थिव ॥ गवस्य धीया पदना ॥ यावदिन्द्रो
 ऽनुवृद्धः ॥ सर्वेषामवपापानां कृतानां मयि जानता ॥ यायश्चिरमुदीपा
 क ॥ मनूनां योयवृद्धिर्ग ॥ ॥ अथ राडकृत्यं ॥ यस्तु राडयदमासि ॥ येकर
 के समावनेन ॥ मनसा कर्म क्षमासन ॥ धनवानपि जायते ॥ मासि राडा यद
 दत्वा ॥ यायसं मेधु सपिषी ॥ दृष्टी केने प्रीक्षनार्थं ॥ लवनैः सह उण्डने ॥ ॥
 अथ अग्निन कृत्यं ॥ मत्स्य पूना ॥ ॥ अग्निन पञ्चदश्यानु ॥ योदया द्वमस्य

नै यत्रासिद्धि मवाप्नाति पुनरावृत्ति इत्युक्ता ॥ ॥ विष्णु धर्मात् ॥ अथ य
 डि कांक्षया नृपुं द्यु न पृथुं द्विजा नय । समवे र्णु न थ दत्ता दा नी शुभ्रति जा
 यते ॥ यो धू मासी युग नासु मास मृ द्वा हि नासु वै । न ते वा भव दाना नी रु ले द
 न गुर्वं रवे न ॥ मरुत्यु र्व सु वं नासु रु ले म द्वा य म म्नु ने । दृश्य ने स हि नाय न
 स्या दि वि वे न्दे व रु त्य गि ॥ यो धू मासी तु म रु ना या को सम्ब स न पु या । न
 स्या दा ना य वा सा दि वा क्य य वि का लि ने ॥ ॥ तथा च ॥ अथ य क शुक्र य क

पु या व त्य ष्ट द शा र वे न । वि न द्वा य षु दा न द्वा त्थ दी पा दि जा रु मा ॥
 न कु मा र्वि यु जं मा सि य म्नु द द्या द्वि जा न ये । आ ना र्ग्य म रु दा द्वा मि य न न ग
 रि जा य ने ॥ ॥ वाम ने पू ना (ख) ॥ तिला दि दाने ॥ तिला मु न द्वा व र्ण द धि
 गा मा य सा दि के । प्री र्थ य द्वा ना रु त्य द य मा ष्व यु जं न रे ॥ आ दि षा वृ न
 पि ल ले का दि षा गु गु रु र्वा ॥ दृ ग ना ष्व यु जं मा सि नि र्ण द द्या द्वि जा न ये ।
 यो धू मा सी तु म रु ना या को सम्ब स न पु या । न
 स्या दा ना य वा सा दि वा क्य य वि का लि ने ॥ ॥ तथा च ॥ अथ य क शुक्र य क

न्याग तं सवित्रि कृष्णयदं इक्ष्माक्या सावयूष्माया पुरुना लिवत्या नन्दवर्ध
नी ॥ ज्ञानेदानीं तथा हामः पिरु देवा रिपूऊनी । सर्वपात्रिकनेयः स्यात् । योगन
स्मिन्तिलोवन ॥ ॥ वृक्षयूना ॥ अथयूककृष्णयदं अर्द्धदयैदिनदिन
प्रिसागदीनयदं वा प्रिसागत्वर्द्धभवत् ॥ ॥ अथकार्तिककृष्ण ॥ वृक्षयूनी ॥ ॥
पृथ्वा मस्तकार्तिकी स्यात् । ऊर्वेन्द्राः कृत्तिकास्तथा मस्तकास्तथा अर्द्धेन्द्राः मस्तका
माद्यीनि वाच्यं ॥ तथा अथ न्युयः मृदु तिथौ तस्यां ननाधिय । सामस्तकार्तिक

[illegible]

पूना (भा) कार्तिका या वृषात्सुर्ग कृतानकं समाचरेत् ॥ स एव वीर्यदमा
ति वृषत्ततदिदं सुर्ग ॥ ननु नैकनकं दीयान् मन्त्रिभूको रुलादिकै। दाभा द
नस्य पीत्यर्थं पुदयात्कार्तिकेन न ॥ ७ क ग ३ सर्वगीर्था नि सर्वयज्ञा ३ सददि
॥ ३ ॥ अन्य ग ३ कार्तिकमास ३ सर्वयुध्वाधिको मग ३ ॥ सर्वधूम नृयुथानि ॥
सर्वदानानि चैक ग ३ ७ क ग ३ कार्तिकमास ३ सर्वदा के ३ वप्रियु ३ ॥ अत्र
नैक किं यद्यमु मासं दाभा दन प्रियै। गिर्य (ग्य) निमवाध्ना नि सर्वधर्मवर्ति

क ग ३ ॥ ॥ नन्दिपूना (भा) ॥ यान न ३ कार्तिक मास मासे नु यत्रिवर्त्तयै न
सन्वत्सवस्य लरु गे रु ली मी स विवर्त्तना ग ॥ ॥ रुविष्णु पूना (भा) ॥ य ३ वृथो
कार्तिक मासि (भा) रनी दी यमा लिकी। वेष्टिका ये न नै रुक्का सहि सर्थो व
मा बुद्धि ग ॥ ॥ अथ माग्ने मित्र कृत्य ॥ महासा न ग ॥ माग्ने शीष नु था मा स म
कर कने सै दिध न। स गे न कर्म धा यु क ३ ३ उर (भा) रवति ध्रुव ॥ ॥ रुविष्णु
पूना (भा) ॥ नै सि क्षी यु मि य यु क्ता माग्ने मासि सि न ग ना। गङ्गा यी य दि ल स्य

न. सूर्यग्रहगणेशसमा॥ लवर्षमाग्नशीर्षदुदत्तासोराग्यमग्न
 ॥ ॥ अथ योषकृत्य ॥ रुविष्टयुना ॥ योषमासयदादवि ॥ ७३ ॥ द्रुम्य
 वृक्षारुवंगु। नदामातमहायुध्या। महारुदतिकोरिगा ॥ नस्यादानजय
 होम। रुयैषविपुलाऊनी। मय्यीगयकृत्यदेवि। गगताहमुकैरुवंगु ॥ ग
 स्माहस्यामहादवि। गगताहमुकैरुवंगु। गस्माहस्यामहादवि। यैषाह
 विधिवद्विष्ट ॥ गन्धयुध्यायहानेश्व। योमभनोवगय ॥ ७४ ॥ यासाद

नगनादीनि ॥ रुयाववभानिव ॥ नायायवस्ययीर्यथोषदय
 नियत्नग ॥ ॥ अथमाद्यकृत्य ॥ महारुवंगु ॥ माद्यमासिगिलान् य
 मु। वाक्कुक्ष्यययकृति। सवैत्यसमाकोर्षु। नवकैसनययधिति ॥
 विष्णुधर्माहने ॥ तिलपुदानाजीधेयु। याम्यलार्कनगकृति ॥ ॥ वा
 मनयुना ॥ माद्यमासिगिला ॥ लाहिलेनयदानवी ॥ ॥ न्यन
 दीनियथान्य। माद्यवयीधनाययु ॥ ॥ सम्वह ॥ ॥ न्यनानि वगय

या द्विष्टु त्वष्टि जिनागमै। ससुखी दीपकायाग्निः ससुखेवडा
 यमै॥ ॥ त्विष्टु यूनः ॥ गीतकाले न्धने दया न्नेना भागनाभने।
 रात्रा वायुनने देवि न्धने मधुलैलैरुत॥ गीतकाले महावद्वि य
 कालेय मिथाननः। सर्वसत्त्वहिगार्थयः त्वेर्न वायुनने सैलैरुत॥ ॥ ११
 अथ रुद्राष्टकं ॥ यद्वायुना ॥ रुद्राष्टकं विदुषा गवो वर्मैः ॥
 दिनकथा। एतन्निन्दयिष्ये नार्थय दातव्यं पुनरुपपत्तिः॥ ॥ अथ य

रुद्राष्टकं

कीर्तुं ॥ नन्दुना एते न विस्वकुम्भस्य नष्टास्तदा दद्यात्पञ्चनाशुष्टाष्टकं
 रुद्राष्टकं विदुषा गवो वर्मैः ॥ रुद्राष्टकं विदुषा गवो वर्मैः ॥ ॥ त्विष्टु
 कल्पलगाया ॥ वक्षीता दय देवैः ॥ वक्षीता दय देवैः ॥ कार्तिकेन
 वमीष्टु का माहर्न रुद्राष्टकं गीयका ॥ योष्वन वमीष्टु का माहर्न देवैः
 पुर्थिका रुद्राष्टकं वमीष्टु का वैश्वकामगुयादगा ॥ वैश्वकामगुयादगा
 केयादेवैः ॥ रुद्राष्टकं विदुषा गवो वर्मैः ॥ रुद्राष्टकं विदुषा गवो वर्मैः

ब्रह्मश्री ॥ न गानिदं वयं वीक्षि गार्धकादि लीलनं न। यदा विद्विद्यती धा
ना तान् वानो रवेद्यदि ॥ यद्वा कानामया लभये ज्ञयेना वदतु नृणां ॥ ॥
वामनयुगात् ॥ देवान् युति कृष्ण वास्य ॥ यदा मृगलिप्रभु देव गलि ४
सृष्टी कुरुत्यति ४। तिष्ठे निसाति चि ४ पूष्ण ॥ अद्वा यापनिकी र्ति ना ॥ वसु १२
रादयदमासि कृष्ण विनयदुद्वा ॥ कार्त्तिकेन वमी शुक्ला मार्गशीर्ष
वदुर्थिका ॥ योषवयोर्धूमासीव माघ शुक्ल उपश्रमी ॥ रा १३ एनवमी

शुक्ला वैश्वकर्मगुयादशा ॥ वैश्वखस्य न गायव ॥ अक्षय दशमी तिगा अ
षाढे कादशा शुक्ला ॥ अमावास्या शुक्ला व ॥ न गद्वा दश पद्वा वि साने दाने
न ॥ एवय ॥ सर्वकर्म विद्विद्ये तापि न मूनि कृन्त्ये ४। वदुद्वा अमा वैव
अमावास्या यपूर्णिमा ॥ वत्तानि गानि पद्वा वि न विसंक्रानि वव ॥ ॥ वार ॥
न समायुक्ता मधु कृष्ण गुयादशा ॥ मध्यमी यदि लथ न सूर्य ग्रह गति ४ समा ४॥
सनियान समायुक्ता सामरा वारुणी सृणा ॥ गद्वा यी यदि लथ न काटि सूर्य ग्रहे ४

समा॥ पुनरुक्तं समायुक्तं नमो गत शिवाय दिमहामहं निविस्थाना वि
हिकुलमद्वयं ॥ अथ ॥ स्नानं कर्तव्यं नित्यं नित्यं शिवाय गते। स
फउमरुर्वेयुक्तो विधवा इह गधुर्वी ॥ अथ ॥ अथ यउं योष वेयुक्ते
थेववा द्वादशमयुक्तं निष्ठा कं पृथं दिनयतु कुर्य ॥ को दं ययसाद श्री १३
यतेनायुनयं न्यदाना यथाविरवविल्लावे वाक्त्वा एव प्रिया निनि ॥ द
द्यान्माद्यवे वेमख विषुवत्कारुनाय एव यावत्ती वदुगी पायं गत्वा द

वनम्यमि ॥ ॥ अथ मार्क ॥ अथ ॥ वदस्यय दिवा राना र्यसि न्नद निशा
र्नवे। अथ अन्तु रवेरुत्त गत्य वीलाड न क्रिया ॥ ॥ काल विवेकं ॥ वन
स्यमि गतसामं द्यायायाया द्युखी स्मृता गउ द्याया पुसा प्राका पिदुर्दमं द
रुमदुर्य ॥ सैदिक यायदा रानं वसं गय वसन्धि ॥ गउ द्याया पुसा प्राका
गउ द्या द्युपक ल्ययत। अमावास्या यदा वाना रुवे दूमि स गत्य वै ॥ एवमस
अरुर्ले विन्या स्नानमो गे दानानद। कुरुष्य सामवा न्ध न विवा न द स कमी ॥

बहु थी सोमबा नहा सूर्य पर्वण गा धिक्कं। अत्र ह्यसममात्यु ह्य। कुरु कुरु स
मास गा॥ वि (७) षा द्वे ध सं युक्ता। नगी या व वि (७) मरु ४। वेध शु वे ध सं युक्ता
नगी या यु दिते ल्यु नें ॥ गस्यां स्नाना य वा सा स्यां अदर्य दान कीर्ति नं। यदा शु
क्र बहु थी ॥ वा नो सोमस्य वै रु वें ॥ गदा सा मुख दा रू या। सु खाना भुक्ति १५
लिता। स्नान दाना दिक्कं कर्म सर्व मन्त्रे यम सु नें ॥ शु क्र य द स्य स फ म्यां सूर्य
वा नो रु वें यदि। सफ मी वि ड या नाम नु द लं महा रु लें ॥ न षा ध न्या पा प द
ना। महा पा न क ना गिनी। स्नान दाने ड या हा म ४। पि न दे वा रि पू ड नें ॥ सर्व

वि ड य स फ म्यां महा पा न क ना गिनी। शु क्र य द स्य स फ म्यां न द र्प प श्र गा न
कें ॥ यदा य स्या रु दा रू या। वि ड या नाम स फ मी। गस्यां स्नाना दिक्कं कर्म रु वें रु
न मु लं वि रू ॥ प श्र गा न कें ग त रि ध ति ॥ मा य स्य शु क्र य द रु स फ मी या
लि ला व ना। उ य नी नाम सा था क्ता। पृ थ्व पा प रु ना गि वा ॥ मा सि रा ड य द
शु क्र। स फ मी या ग धा धिया। अ प ना डि न ति वि रू या गा। महा पा न क ना
गिनी ॥ शु क्र य द रु व स फ म्यां यदा सै क म नें न वि ४। महा उ या न थ स्या

दे सफमी रात्क र प्रिया प सान दाने ड पा हाम क पि न द वा ति पू ऊ न । स
 र्वा का टि पु क्ष पा के रात्क रे स्य व वा य था ॥ या पु मा र्ज नि प्र मा ति शु क य द
 पु स फ मी । न न्दा सा क थि गा वी न । सर्वा न न्य क नी शु रा ॥ त्ता न दा ना दि के स र्व
 म स्या म क य म श ने शु क य के व स फ मी न क र्ज स वि रु द्ध व न ॥ य था य थ म १५
 म र्वे वा । तथा रु डा रु ड गो व ड न । स्ना य न ग रु द व स्य य त्ने न के थि गे व (वि ३)
 ०० ह्य वा क थि गा वी न । रु ड नो मे ति स फ मी । या मू या ष्य न रा ती म व न्म

ला क म वा प्र या न ॥ शु क य के पु स फ मी य द र्ग पु क नी रु व ग । वृ दा सा का
 नो दा पु ध्वा स फ मी पा य ना नि नी ॥ ग स्या सै धु य य त्ने न वि नो राने दि वा क
 ने । स फ ड न्म क गा त्या पा न्म श ने ना रु सै ग य ॥ य ए अ य वा सै क र्ज न ग स्या
 निय ग मा न स ॥ स र्व पा य वि छे द्वा त्मा मा ध मा सि ति गा द्म मी ॥ ग नि नी रा ष्य
 व र्म (वा) ॥ अ हं व य ग वा दू र्य स स्य ॥ स क्ता गि ता नि न ॥ ॥ म त्स्य पु ना (वा) ॥
 ष डि ती र्थ स ह सा नि ष डि ती र्थ ग नि नि व । मा ध मा सि स मा या नि ग नि य म
 ३ सूर्य ला क म दी य न ॥ शु क वा य दि वा क म्वा ष क्ती वा स फ मी ग था । न वि वा न स र्म यु का

ग थि ३ पु द्वा न मा स न ॥ ३

नासंगम ॥ गवीं गतसहस्रस्य यद्दुदक्रियगनत्रेष्टाषड्वैरुलदवक्रि
मकनसुदिवाकने ॥ वहिः ४ स्नाननुवायादी द्वादशद्वैरुलैलरगावज
गदिमुदीयाकी नशागत्रुवकुर्नुदी ॥ दशधादवखागेव गगधव
महानदी ॥ गगध्वनद्वैवाकन महानद्याश्चसंगम ॥ सहस्रमुदि १०
गसर्व गहलैमकेनेवो ॥ गयायी स्नानमात्रेण लोरोमानुषानृप ॥
श्रुयावृत्तगत्रोवन्तु यश्चकली स्नानमात्रेण ॥ यदयदंश्चमधस्य रु

लीयाधामिमानवशा ॥ योषमासिमहादवि अष्टम्यीनगऊष्टुरी ॥ नद
गजायनेपृथ्वी यलोकेनोदमथने ॥ नदायिसामहापृथ्वी ॥ उयनीय
शुमीधुता ॥ नस्या स्नाननदादाने ॥ उयहामश्वनर्यदी ॥ सर्वकाठिमुदीय
विद्वर्गैरवगिहृत्सुग ॥ नोदमगपूर्वरादयदा ॥ ॥ यमपूना ॥
उकादशीद्वादशीवरात्रि ॥ गषययादशी ॥ तिस्रः साहिविहृया म
हापागकनामिनी ॥ रुक्मन्युक्तेयश्चम्या ॥ अवस्था ॥ वलनव ॥ सासि

यावद्यदेवैव पूज्यसे वज्रलीसदा ॥ अथसे कानि विद्वान् ॥
न ॥ अहवसिष्ठ ॥ अयनविष्वेद्वचनसुष्ठुगीतयुग्मवर्जित
सूयश्च संकाशादादशस्मिता ॥ मन्त्रकैरुसंकाशैर्द्वन्द्व
द्विधायनविष्वेद्वचनसुष्ठुगीतयुग्मवर्जित ॥ १
कृष्णसुसिद्धदेवयदानविश्वतद्विषुयदीनामविषुयाथधिकैरुली ॥
कन्यायामिधूनवर्कधनूयपित्रवर्गैर्गति ॥ यत्तुगामिमुखीयाकाषट्

जातिगुणारुले ॥ अगीतानागर्गपूज्यद्वन्द्वद्विधायनाउपनाषट्
नकाले मगर्गविष्वेद्वचनसुष्ठुगीतयुग्मवर्जित ॥ मन्त्रकैरुसंकाशैर्द्वन्द्व
द्विधायनविष्वेद्वचनसुष्ठुगीतयुग्मवर्जित ॥ यत्तुगामिमुखीयाकाषट्
तिका ॥ पूज्यारुविषुयश्च याक्रेयश्चदपिषाट् ॥ दिवर्गैकमस्यपूज्य
महश्चक्रेयकार्तिगैनागीसंक्रमस्यपूज्यदिनार्द्धस्नानदानयो ॥ अर्द्धना
गदधरुस्मिन्मन्त्राद्विषुयनिविश्या ॥ उर्द्धसंक्रमस्यार्द्धमृदयाचुदनद्व

यं ॥ पूर्ये वा द्वा न उ उ य दा स कु म न न वि षा आ द्वा दि न द्वा य पू र्थ ॥ उ क
 म क न क क क ॥ वि षा ल क क क क क पू र्थ म क न वि षा नि स ॥ वि षा द्वा
 (व) पू र्थ म गी त वा ल ना य (व) ॥ अ द्वा स क म (व) पू र्थ दि ना द्वा स्ना न दा
 न या ॥ ना जी स क (व) पा क वि षु व ल य न दि नी ॥ या या ॥ से नि दि ना ना ॥ १८
 य ॥ सा सा ॥ पू र्थ ग मा ॥ सा ॥ ग ॥ अ य न का टि मु धि नी ल क वि षु व दी रु
 ल ॥ व उ गी नि स रु मु नु व उ गी ली ल ग व (व) ॥ ग न मि न्द्र क य दान

म ३

स रु मु नु दि न द्वा य ॥ वि षु व गी त सा रु सी वा ती या न ल व न न क क ॥ ॥ अ
 रु गी त व ॥ न वि सी कु म (व) पा क न सा या य मु मा न व ॥ स फ ड म नि ना
 गी व ॥ नि द्वा न य रि डा य ॥ सी का नी या नि द्वा नि रु य क या नि मा न वे ॥
 ना नि रु य द दा ल क ॥ स फ ड न प न ॥ द यी स मा य न दान वि षु व म धु
 म ग था ॥ व उ गी ली वा ती ना या वि म् क व न्द्र रु य था ॥ उ या व व र मं डा ना
 ला ला या र्च य न रु नि ॥ या ग ॥ य वा य दा नं स ॥ स का म्य रु ल ना प्री या ॥

मि१

आदव विदुः॥ अयनविषयवैव गद धवनुसूर्ययाध अहनाश वि
नत्तागः सर्वपाथेऽपमयै ॥ ॥ मनु॥ आदित्यादनिर्सेका नो गद
धवनुसूर्ययाध उयवासानेकरु शा. नृदि. धावृणि. धाग. धा॥ म. ग. क. न. नि
सेका नो गद धवनुसूर्ययाध अहनाश सस्यर्धनिर्वेव. नत्ताया इधुवा नि
धो॥ ॥ विष्णुना धा॥ वाकमार्क धु॥ निर्वेगः सविगायत. गदादि. तान
मवर्ग. दाने वैवा कयैथार्क. मेगर्क पाथनिःरुत्तै॥ तुला मकन मेव

धु. पागः सनायी सदा रवग. रुविष्मं वृष. वर्यश्च. महापाग कनाशनै॥ स
र्यस्यैरुसेका नो. मनु॥ कृगयूगस्यवा अथ वृष्टिकसेका नो. मनु॥ मुगाय
गस्यवा. ईयश्च वृषसेका नो. दायनान्ध विरुया. तथा कृमिसेका नो.
मनु॥ कलियुगस्य॥ युगश्च वृषयूगान्ध धा. मनु॥ मकयमश्च ॥ सर्वसुन
विसेकानि धुर्वेवगीनक. युकात्र सापियुगान्ध॥ मकनसेकानि त्रपियुग
न॥ सफ. म्या यदि तुला मेषसेकानि सापियुगान्ध॥ नाद्रयना धा. मकानि ध

सायिभक्त ॥ गगुनानमननक ॥ गगुनदवीपूना ॥ दादलोवसमारखा ॥
 ना समाधरं कानि क ॥ यना ॥ मासक ॥ अं तु वा द्वा ॥ न के के व य थ ॥ ७ ॥ म
 दा मन्दा कि नी ॥ धा ॥ धा ना ये व म हा दनी ॥ ना द सी मि छि ना वि वे सी का नि स
 फ धान ॥ मन्दा धू वं व वि रु या ॥ मुदा मन्दा कि नी ग था ॥ कि पु धा ॥ दा वि जा ॥ २०
 नी या ॥ मि छि ना के मु से कु म ॥ धू वा धू रु ना सि ना सि नी ॥ म ॥ ३ ॥ वि ॥ अ न
 म ॥ ५ ॥ ॥ कि पु न द ना ॥ अ वि ॥ अ ॥ रु ॥ अ रि ॥ ॥ उ ग ॥ दू ॥ इ ॥ रं ॥ म ॥ व न ॥ ॥
 तलाति ॥ धि ॥ २ ॥ कु ॥ १ ॥ नायू ॥ २ ॥

घ ॥ ग ॥ पू ॥ खा ॥ ॥ कु ॥ न ॥ म ॥ ॥ अ ॥ अ ॥ ॥ मि ॥ छि ॥ दू ॥ वि ॥ ॥ वि ॥ धू ॥ वं ॥ धू
 व य ॥ कु ॥ फ ॥ द ॥ रं ॥ र ॥ व ॥ ति ॥ वा ॥ द ॥ य ॥ ॥ न ॥ व ॥ वि ॥ धू ॥ य ॥ द ॥ य ॥ व ॥ ॥ य ॥ उ ॥ ग ॥ ति ॥ मू ॥ ख ॥ धू ॥ व
 ॥ ॥ ग ॥ ग ॥ ग ॥ य ॥ ज ॥ वा ॥ ली ॥ ॥ अ ॥ वा ॥ क ॥ धा ॥ उ ॥ ग ॥ वि ॥ रु ॥ या ॥ ना ॥ अ ॥ य ॥ य ॥ अ ॥ य ॥ धा ॥ उ ॥ ग ॥
 का ॥ ल ॥ पू ॥ ॥ अ ॥ र्क ॥ सी ॥ का ॥ की ॥ वि ॥ द ॥ वि ॥ य ॥ वि ॥ की ॥ रि ॥ ग ॥ ॥ ॥ दा ॥ वी ॥ पू ॥ ना ॥ ॥ सी ॥ का
 नि ॥ रु ॥ ली ॥ ॥ धा ॥ दा ॥ वि ॥ धू ॥ व ॥ वि ॥ रु ॥ या ॥ धा ॥ ना ॥ अ ॥ द ॥ धू ॥ र ॥ य ॥ दा ॥ म ॥ हा ॥ द ॥ नी ॥ व ॥ धी
 ना ॥ धा ॥ ॥ अ ॥ वि ॥ का ॥ ना ॥ उ ॥ या ॥ व ॥ हा ॥ ॥ वा ॥ अ ॥ ल ॥ पू ॥ ॥ सा ॥ ना ॥ ॥ य ॥ वा ॥ ना ॥ कु ॥ न ॥ क

मसिधामसर्वेषां नृकानाञ्च मिथि गारु गिवद्धनी ॥ नृयाग्याशानि पूर्वोद
मध्याह्नवदिकारुमाधग्रयनाङ्गतथोवेभ्यश्च ॥ १२ ॥ दाम्भ्यमथनवी ॥ पि
भावास्तु यदापठु अर्द्धनाशेषनाकसा ॥ अर्द्धनाशेषगीतं ॥ यीशुनन
ठनेरुका ॥ ३ ॥ ४ ॥ कालेन संपादय ॥ निरुक्तिस्त्वामिनाजना ॥ हनिष्यति
गान्धर्वान् संध्याकालेन संपादय ॥ ॥ ०० ॥ निषर्वसंयुक्त ॥ समोक्त ॥ ॥ १२ ॥
नृवसोवर्षेयश्च वल्लि (सोसिने) ॥ विधायकस्य वानवे नदिनलित्वि

वापि वानवश्च गव्येयुक्ता ॥ गजाश्च भविकी पूर्वास्त्रागलरगनने ॥
॥ ॥ गनिष्यन् प्रादित्यवृहस्यगिश्च गवानसं विष्णुनस्नानया ॥ यव ॥ अ
व्यमधयस्तु यारुलेलोकेशना ॥ ३ ॥ ॥ लिङ्गपूना ॥ पुनर्वसुवृत्त्यय
गात्रेण माभसिगायमा ॥ आगस्त्यदिलस्य ॥ वाजयय रुलेलरग ॥ ॥
पुनर्वसुनक्षत्रं वृधवानलाक ॥ वेणुशुक्ल ॥ अक्षमीकृत् नदीस स्नानया ॥
ने वाजयय यस्तु यादुरुलेलोकेशना ॥ ४ ॥

आशा सरकाथि

1.122

ASHA ARCHIVES